डॉ. जसबीर चावला

स्थायी पता :
123/1, सेक्टर-55
चंडीगढ़-160055

+91-8847651213
jasbirchawlachd@gmail.com

पिता : श्री मोहन सिंह चावला

शिक्षा : बी.टेक. इन मेटलर्जीकल इंजीनियरिंग (काशी हिंदू विश्वविद्यालय)। एम.बी.ए. (बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, राँची, मेसरा)। एम.ई. इन मेटलर्जी एण्ड मैटीरियल साइंस (पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज विश्वविद्यालय, चंडीगढ़)। पी.एच.डी. (जातक कथाओं में प्रबंध शास्त्रीय तत्व) पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़। एम.ए. (रूसी भाषा), पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़। फ्रेंच एवं तिब्बती भाषा में डिप्लोमा।

अनुभव : भारतीय इस्पात प्राधिकरण (सेल) के विभिन्न कारखानों एवं शोध केंद्र (राँची) में लंबा अनुभव। इस्पात मंत्रालय (भारत सरकार) के मानव संसाधन विकास हेतु संस्थान में अध्यापन का लंबा अनुभव।

प्रकाशित कृतियाँ : ***कविता संग्रह–*** चेरनोबिल, हलफनामा, जनता जान गई, यह नहीं आवाज खालिस्तान की, सबेरा सवाल बना रहेगा?, एक टुकड़ा बादल, इसे फिर से सुनिये, बस में बिकती किताब, नौ खंड पृथ्वी, अपने घर लौटकर, महज भीड़ नहीं कलकत्ता, देसवाली में ईश्वर। ***लघुकथा संग्रह–*** नीचे वाली चिटखनी, सच के सिवा, कोमा में मछलियाँ, आतंकवादी, शरीफ जसबीर, डस्टबिनों का हँसी योग, सियाचिन का पेड़, तैंतीसवीं पुतली।

निबंध संग्रह– दरारें और दलाल, नजर-नजर-नजरिया, इस्पाती ऊँचाइयों की ओर बुद्धकीय प्रबंधन पुस्तक माला-भ्रष्टाचार प्रबंधन, दाम्पत्य-कलह प्रबंधन।

सम्मान : हिंदीतर भाषी हिंदी लेखन पुरस्कार, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार (1990-91)। हिंदी सेवी सहस्त्राब्दी सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय विश्व शांति प्रबोधक महासंघ नई दिल्ली (2000)। राष्ट्र-भाषा रत्न, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (2001)। साहित्यश्री सम्मान, आधारशिला विश्व हिंदी मिशन, आधारशिला फाउंडेशन, उत्तराखंड। साहित्य वाचस्पति, श्री सिद्धि गायत्री सनातन जन सेवा संस्थान, कानपुर (2013)। प्रो. रामप्रकाश गोयल साहित्य शिरोमणि सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी साहित्य कला मंच (2013)। साहित्य शिरोमणि सारस्वत सम्मान, भारतीय वाङ्मय पीठ, कोलकाता (2013)। त्रिवेणी साहित्य सम्मान, साहित्य त्रिवेणी, कोलकाता (2013)। कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर सारस्वत साहित्य सम्मान, भारतीय वाङ्मय पीठ, कोलकाता (2014)। सृजनगाथा सम्मान, रायपुर (2014) बीजींग (चीन) में। नये पाठक सम्मान (2016) बाली (इंडोनेशिया) में।

सम्प्रति : 'वाक्' साहित्यिक संस्था के संस्थापक अध्यक्ष, स्वतंत्र लेखन एवं बुद्धकीय प्रबंधन का प्रचार-प्रसार।

₹ 150.00

ISBN : 978-93-90419-20-3

बोधि जन-संस्करण
आवरण चित्र : कुँअर रवीन्द्र # 094255-22569

वक़्त बीमार है • डॉ. जसबीर चावला

वक़्त बीमार है

ग़ज़ल शतक+

डॉ. जसबीर चावला

वक़्त बीमार है

डॉ. जसबीर चावला

वक़्त बीमार है

(ग़ज़ल-शतक +)

डॉ. जसबीर चावला

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
फोन : 0141-2213700, 9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © डॉ. जसबीर चावला

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN :

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत

आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर

मूल्य : ₹ 150/-

WAQT BEEMAR HAI (GHAZAL) by Dr. Jabir Chawla

दिल्ली की सरहदों पर डटे
किसान-मजदूरों के साथ-साथ
रौनक नईम, विनोद द्विवेदी, विनोद तिवारी,
नज़र लुध्यानवी, रमेश बत्तरा, कुमार बृजेंद्र
अगम शर्मा, सेराज खान, बातिश, विज्ञानव्रत और तमाम
बेलियों-हमजोलियों को जो जाने-अनजाने मेरी
ग़ज़लबाजी में शरीक होते रहे।

अनुक्रम

दुबारा भेज दी अपनी अर्जी 13
कुछ करो कि टुक हवा आये 14
सहमे-सहमे लोग दिखाई देते हैं 15
खुद के हम इस कदर सताये हैं 16
वो अचानक मिलेंगे सफर में हमें 17
सुबह बदली है, शाम बदली है 18
कभी आते हैं, कभी फिर जाते हैं 19
अच्छा है ये भी अच्छा है 20
मुझसे कुछ भी कहा नहीं जाता 21
जितनी कोशिश की उतना ही डूबा 22
सुन के दिल क्यूँ उदास हो आया 23
धान के खेत-सी कट गई है ज़िंदगी 24
कोई भूखा कोई अघाया है 25
कोई काँटा चुभा पाँव में 26
मुँह को हाथ का सहारा है 27
ख़ुद अपने पैर पर खड़े होवो 28
क्या धरा है ज़िंदगी में छुपाने को 29
वक़्त की नब्ज़ टटोलो 30
कुछ दिन हैं जुलूस के 31
देर पर देर हुई जाती है 32
मैं कमज़ोर हूँ यह राग उठाने के लिये 33
आज माँगी है हमने दुआ किस लिये 34
बाजार में कोयले को आग लगी है 35
रास्तों में हाथ कुचले पड़े हैं 36
ज़िंदगी एक मोड़ खाकर रुक गई 37
तल्खी और चीख भरी आवाज सुलगाओ 38
गर हम भी उतर आयेंगे जलने पे मेरे यार 39
अपनी सूरत के टुकड़ों को उठा लो मेरे यार 40
दु:ख न डरते हैं न डराते हैं 41
जोड़ जोड़ में दर्द गहरा है 42
सिर्फ भ्रम है एक आईना होने का 43
यहाँ बैठा है अंधेरा डरा-डरा 44
ज़िंदगी खाली दिनों का सिलसिला है 45
आपसे ही आपके बारे हुए हैं हम 46
पाँव चलते-चलते धूल हो गये हैं 47
सरकटे कंधों पर वजन भारी है 48
कुछ नहीं सूझता आसमाँ देखते हैं 49
आकाश बांट दिया खांचों में 50
चल तू भी पत्थर उठा दिल 51
अब जो मेरे घर वह आया करेगा 52
कहाँ जा छुपा दिन सरकते-सरकते 53
सुबह-सुबह टकराते लोग 54
तुम्हें पाक जाना था सजदा किया था 55
इक रुख लगाया तो था, क्या हुआ 56
प्यार है इसलिये शुबह करता हूँ 57
निगाहें झुक गईं मिलते खुद ही 58
प्यार पल भर तो निभाया होता 59
सड़क के साथ कौन रोता है 60
उतना पानी नहीं जितना भर गया है 61
हम हाथों पे अपनी छत संभाले जाते हैं 62
यही इक बात भुलाई न गई 63
चेहरे टपक-टपक कर गलियों में छा रहे हैं 64
साँझ की अजान में ढिबरी जली है 65
न स्वाद के लिये न जीने के लिये 66
नाक तक दर्द में डूबे हुए हैं लोग 67
जंगलों ने नकाब ओढ़ी है 68
खेत सूखे बादलों से भर रहे हैं 69
हवा में पानी की बूँदें हैं 70
तेरी ख़ामोशी में एक ग़ज़ल नजर आती है 71

आकाश का जो टुकड़ा झांकता है 72
बीच तालाब में मछली मरी है 73
बसंत ने दिये दरख़्तों को नये लिबास 74
इतनी उलझी कि बिन छोर हो गई 75
आओ कहीं बैठ पीयें चाय 76
मैं ताउम्र तुमको देखूंगा 77
हमें आस पे जीने दो 78
अँधेरों में डूबे हुए रास्ते 79
चादर की तरह ढँक लिया है तुम्हारी याद ने चारों तरफ से 80
दर्द कहाँ, दवा किसकी किये बैठे हैं 81
जब तलक आसमान दिखता है 82
शहर हर वक़्त वक़्त खाता है 83
बोल के पहले तोल 84
कुछ हादसों के बाद ऐसा लगा मुझे 85
सब नहीं तो यार कुछ लोग ही बोलें 86
रोज़ का आना जाना है 87
हरसूँ खंडहर खड़े हैं बहुमंजिल 88
मौसम का नाजायज़ फायदा उठा रहे हैं 89
साकी मुझे एक नहीं सैंकड़ों ग़म खाते हैं 90
अपने ही घर में हुआ हूँ अकेला 91
संसद का बोझ किसानों के सर 92
सुन के दिल क्यूँ उदास हो आया 93
बहुत दूर तक जायेगी तेरी याद 94
नामों के चक्कर में अंधे बने हैं 95
बोते हो तो काटोगे, जो काटना है बोओ 96
नाहक न हक हलाल करो 97
चाहता क्या है तू दुआ करना 98
दर्द जब कद से बड़ा हो जाये 99
तुझको देखूँ तो नशा चढ़ता है 100
थी मिली बूँद-झलक मुझको बहुत है 101
वक़्त बीमार है किसको सजा देते हो 102
खूबसूरत हो बहुत तेरे शहर! क्या कहने 103
शक्ल किसकी, देह यह किसकी देखो 104
फिर कहीं और ही पढ़ी होगी 105
अर्से से तस्वीर गुमी-सी लगती है 106
आपकी बात क्या करे कोई 107
रात बीती मगर सहर न हुई 108
हमें आसमान ने उजाड़ा है 109
एक दिन सबको नींद आती है 110
बस रंग ही नहीं फिरे हाथ फिरे हैं 111
एक जून खाता शायर हाँडी ही इकडंगी[1] है 112
एक ही तन है कितना दर्द समेटे है 113
बहुतों के बहुत सारे पैगाम आये 114
दिन बीता रात बीतती है 115
कोई कभी न मरे ऐसा कहाँ होता है 116
आकर राजधानी के तट पर हलधर ने ललकारा है 117
यह भारत किस राह पर चल पड़ा है 118
आज़ादी का अमृत-महोत्सव हलधर भी मनायें 119
आज एक लंबी सैर का इरादा लेकर निकला हूँ 120
ज़िंदगी मौत की दो गजी दूरियाँ 121
होने दो ना आँखों को दो-चार 122
फिर हरा होने लगा है डूबते सूरज का घाव 123
एक को दूसरे का सहारा है 124
शहर नहीं शोर शराबा है 125
जो जहाँ जैसा भी है मंजूर है 126
होड़-अंधा वक़्त भागा जा रहा है 127
क्या गिरा कि टूट गया 128
दिन छोटा और रात बड़ी है 129
कोई को दुख नहीं, किसी ने इस्तीफा नहीं दिया 130
हर चौराहा काला कानून वापस चाहता है 131
किसानों के समर्थन में हर चौराहे झंडे लेकर खड़े हैं 132
जलियाँवाला बाग बना दो 133
अपने अपने दुख हैं अपने ही सहने हैं 134
दिल्ली की सरहदों पर क़ैद हुए हैं 135
कालाधन जो बाहर पड़ा है 136

दो शब्द

ग़ज़ल सुनना अच्छा लगता था। कहने की तमीज़ नहीं थी, पर हिन्दी में लिखी गई। 'सारिका' में छप गई। वहाँ दोस्त रमेश बत्रा था। इससे तमीज़ बनी न बनी, हिम्मत बन गई। हिन्दी ग़ज़ल शायद लचीली होती है। सो कहने लग पड़ा। पर सच तो यह है कि मशक्कत नहीं की। वैसी ही कभी-कभी बनने लगी, जब उसका मूड होता।

छोटी-बड़ी कई पत्रिकाओं में छपतीं। यदा-कदा आकाशवाणी पर भी सुना देता। कविता-संग्रहों में भी कुछ चली गईं।

ऐसी ही इकट्ठी होती-होती तादाद बढ़ती गई। कई बार दिल करता कि एक अलग से इनका संग्रह छपे पर हर बार कोई अड़चन होती। होशियार सिंह जी ने एक बार टाईप भी कर दीं, अस्सी-एक, फिर कहीं पड़ी रही पांडुलिपि। पिछले साल से चल रहे किसान-मज़ूर आंदोलन ने फिर ग़ज़लबाजी को उकसा दिया। पैंतीस सालों का यह पहला संग्रह ग़ज़ल शतक + 'वक़्त बीमार है' पाठकों की नज़र है। खुद ही बतायें जो कमी-बेशी है। आमीन।

-डॉ. जसबीर चावला
123/1, सेक्टर-55, चण्डीगढ़-160055
मो. +91-8847651213
ई-मेल : chawlajasbir063@gmail.com

1

दुबारा भेज दी अपनी अर्जी
देखें सरकार की क्या मर्ज़ी

जिसकी तस्वीर पे हम मरते हैं
उन्हें सूरत से मेरी एलर्जी

दरवाज़े खुलते हैं बार-बार मगर
कब निकलती है ढीठ खुदगर्ज़ी

ऐसे कपड़ों पे न हँसो बच्चो!
नंगा राजा तमाशची दर्जी

लीजिए जुर्म इकबाल किया
जान छोड़िये अब बख्शिये सर जी।

2

कुछ करो कि टुक हवा आये
कुछ कहो कि कुछ कहा जाये

इतनी उमस है कि इन्साँ क्या है
बादल भी यहाँ नहा जाये

पकड़ो अगरचे पकड़ पाओ
वक़्त हर वक़्त याँ बहा जाये

राम के सामने से बेहतर है
जानकी धरती में समा जाये

सोते भूचाल ने जगाया था
जागे सैलाब आ सुला जाये

3

सहमे-सहमे लोग दिखाई देते हैं
धुंध में भटके लोग दिखाई देते हैं

झूठ के हाते भरे दिखाई देते हैं
सच से डरते लोग दिखाई देते हैं

मिट्टी के घर झेल दर्द भी जिंदा हैं
मलबे पक्के महल दिखाई देते हैं

खेतों झोना सोना मन मन फलता है
मन-मन बंजर बाग दिखाई देते हैं

हरियाली के वादे करते हरे-हरे
जंगल हीरे दबे दिखाई देते हैं

4

खुद के हम इस कदर सताये हैं
आँसुओं से भी रो न पाये हैं

हल्का हो दिल तो किस तरह आखिर
मुद्दतें हुई, वो भुलाये हैं

मिलेंगे गर यहाँ शहर में हम
कहेंगे किस शहर से आये हैं

राज़ था, खुल गया, अच्छा ही हुआ
पहले सब ख़त भी खुले आये हैं

अब तो बस यही हक़ीक़त है
हम ही शमां हैं, हमीं साये हैं

5

वो अचानक मिलेंगे सफर में हमें
शायद हम इसलिए आवारा हैं

ख़ुदा सबका सहारा होता है
हम पैदा ही बेसहारा हैं

एक उस पार किनारा है
एक इस पार हम किनारा हैं

वक़्त बदले, हम कहाँ बदले
हैं, वक़्त के पौ बारह हैं

हमारी बात वो सुनें न सुनें
उठे कहने को हम दुबारा हैं

6

सुबह बदली है, शाम बदली है
ज़िंदगी सरेआम बदली है

धूप पहले कभी स्याह न थी
आज सूरज पे गहरी बदली है

जगे थे कि सभी जगे होंगे
यहाँ तो रात उनकी अगली है

गलती अपनी थी इसको छेड़ा था
कहते हैं याद कोई पगली है

जिएं - मरें, फरियाद करें
जीना असली, न मौत असली है।

7

कभी आते हैं, कभी फिर जाते हैं
कोई पूछे वो क्यूं सताते हैं

हमारी जान से खेलें, मंजूर सही
जान में आग क्यूं लगाते हैं

खफ़ा हैं तो सदा खफा ही रहें
हंसके क्यूं फिर खफा हो जाते हैं

साथ रहना है तो फिर दर्द में भी साथ रहें
दर्द उठते ही क्यूं साथ छोड़ जाते हैं

याद आना है तो दिल चूर-चूर कर जायें
चोट करते हैं फिर क्यूं उसे सहलाते हैं

8

अच्छा है ये भी अच्छा है
उनमें अपना ख्याल अच्छा है

मिलें सही किसी भी हाल
फासला बीच का अच्छा है

न, कसम से यह बात नहीं
आपसे और कौन अच्छा है

नहीं, कहीं किसी ठौर नहीं
इस जगह रंग-ढंग अच्छा है

तुम्हीं से बात बढ़ेगी आगे
जितनी रुक-रुक के बढ़े अच्छा है।

9

मुझसे कुछ भी कहा नहीं जाता
दर्द बस अब सहा नहीं जाता

इक इसी बात पे शर्मिन्दा हैं
तुमको देखे बिना रहा नहीं जाता

वो कोई और था जो कल तक था
आज कल तक रहा नहीं जाता

कभी खुद से कभी जमाने से
गिला तुमसे किया नहीं जाता

चैन से यूं ही उम्र कट जाती
चैन तुमसे अगर नहीं जाता।

10

जितनी कोशिश की उतना ही डूबा
दिल कश्ती नाखुदा महबूबा

हाथ लगते दीवार ढह जाए
तुम नहीं घर, इस कदर ऊबा

मुश्त भर-भर गुबार की डालो
हस्ती-ए गर्द ओ आब अज्जूबा

आँख थमती न होंठ ही रुकते
नाला ओ' अश्क में खुदा डूबा

सिर पे बाँधा तो कफन ही बाँधा
दिल जो बोला तो बोला महबूबा

11

सुन के दिल क्यूँ उदास हो आया
तू बहुत दूर से मिलने आया

उसे पहचान है परिंदों की
अहदे पैगाम कबूतर लाया

ऐसी बन आई, थी कि क्या बनती
बात दर बात तेरा नाम आया

गुलों में रंग हवाओं में शोखी
बसंत आया कि मेरा यार आया

मकतले यार में रूसवाई क्यों
हर घड़ी रहता जन्नतों का साया

12

धान के खेत-सी कट गई है ज़िंदगी
एक रसीदी टिकट से सट गई है ज़िंदगी

भारी भारी गाड़ियां हॉर्न दे गुजर जातीं
साइकिल-सी राह छोड़ हट गई है ज़िंदगी

मिट रही हाथ से हर लकीर किस्मत की
खाइयों से इस तरह पट गई है ज़िंदगी

उड़ रहे सपनों में बावजूद पिंजड़े के
राम-राम तोते-सी रट गई है ज़िंदगी

वही रहे ओढ़ते, धोते, बिछाते ज़िंदगी
जगह जगह गमछे-सी फट गई है ज़िंदगी

13

कोई भूखा कोई अघाया है
कि उनका रामराज आया है

यह सुरंग कहाँ जा खुलती है
कौन लोगों को इसमें लाया है

कोई सूखा हुआ जलाशय है
कोई शैम्पेन में नहाया है

बिलखता सड़कों फुटपाथों पर
यहाँ जिस घर ने खूँ बहाया है

सदा से चुप फाके काट रहा
जिसने सबके लिए उगाया है

14

कोई काँटा चुभा पाँव में
अपने बरगद की छाँव में

डगमगाई नैय्या पतवार बिन
नाखुदा घुस आया गाँव में

जालसाज़ पत्ते थे हार गये
जो भी लगाया दाँव में

कोयल की बोली गुआच[1] गई
कौओं की काँव काँव में

रास्ते तय हुए ठीक-ठीक
लुट गये आकर पड़ाव में

1. गुआच (पंजाबी) = खो

15

मुँह को हाथ का सहारा है
पीठ से पेट का गुजारा है

कहीं तो लोग जीते होंगे
यहाँ इंसान रोज़ हारा है

दूषें उनको या ख़ुद को कोसें
जो कहें देश ही तुम्हारा है

अगर हमीं हैं यहाँ के राजा
किसलिये हाल यह हमारा है

उसकी बात कोई सुन लेता
दिल जसबीर का पुकारा है।

16

ख़ुद अपने पैर पर खड़े होवो
गर्मी में मिट्टी के घड़े होवो

जो कहे अपना उसे दुत्कार दो
तुम जात-पात से परे होवो

तुम हरिजन या राजन जो भी हो
सबसे पहले सज्जन होवो

आँख रहे सातवें आकाश पर
पैर सबकी जूतियों में धरे होवो

तुम बनो आँसू अंधेरी रात का
औ' उजाले-जश्न कहकहे होवो

17

क्या धरा है ज़िंदगी में छुपाने को
बिक रहा गोश्त अन्न खाने को

कैसा जालिम हुआ शहर देखो
आदमी मजबूर जिये जाने को

तौलकर गेहूँ बिके बाजार में
और बिकता जिस्म आने-आने को

एक ही धंधा हुआ पूंजी बगैर
एक ही पूंजी हुई कमाने को

माफ करना दोस्त गर गलत बोलूं
माफ मत करना मेरे जमाने को

18

वक़्त की नब्ज़ टटोलो
यहाँ ऐब मुँह पर बोलो

खूब सुबह घर से बाहर
गई रात दस्तक दे लो

दुनिया है धक्कम-धुक्का
चलना है तो धकेलो

कौन मरा कौन है जिंदा
खबर मेरे गांव की ले लो

देह है खाली लोटा
जैसे चाहो उँडेलो

19

कुछ दिन हैं जुलूस के
बाकी हैं घास-फूस के

सच्चे को मिलता नून-भात
दूध-मलाई चापलूस के

मुल्की नेता अब कौन रहा
कुछ अमरीका, कुछ रूस के

कोठियाँ उनकी रोज बनें
हम लोगों का खून चूस के

गर्मी-बारिश में नहीं मरे
सामने हैं दिन पूस के

थाना कचहरी अमीरों के
दफ्तर हैं सारे घूस के

20

देर पर देर हुई जाती है
और अंधेर हुई जाती है

अंधेरे किस तरह छुपायें हम
मुँहफट्ट सबेर हुई जाती है

अपने पैबंद कुछ और सही
कोठी कुबेर हुई जाती है

सूख के खेत कंकाल हुए
तोंद कई सेर हुई जाती है

बिआई गाय पर हा गाज गिरी
साँस कमजोर हुई जाती है

21

मैं कमज़ोर हूँ यह राग उठाने के लिये
आओ कंधों मेरी आवाज़ उठाने के लिये

मैं बिलखता हूँ सड़कों पर, फुटपाथों पर
उड़े, बहसे वे मेरा साल मनाने के लिये

खोखले आईनों में जो शक्ल नज़र आती है
वह महज ख्वाब हैं आँखों को लुभाने के लिये

भीड़ पे मत जा ऐ आग में जल रहे शहर
लोग आये हैं यहाँ ढोल बजाने के लिये

इनकी बातों में मेरे यार कभी मत आना
दाँत खाने के हैं कई और दिखाने के लिये

जसबीर चल पड़ा साधु बनकर
लोग कहें फोटो खिंचाने के लिये

22

आज माँगी है हमने दुआ किस लिये
रौशनी को ज़हर है हुआ किस लिये

लोग डरने लगे हैं सुबह देखकर
रात का ये असर है हुआ किस लिये

एक औरत गिरी है सड़क लाँघते
नाचे जाती मगर भीड़ है किस लिये

कुर्सियों की लड़ाई भयंकर चली
हम गरीबों की रोटी छिनी किस लिये

मर्ज़ को तो जरूरत सुषेण एक की
नीमहकीमों की रैली लगी किस लिये

23

बाजार में कोयले को आग लगी है
खदान में कोयले को आग लगी है

इधर खाली वैगन भरमार पड़े हैं
उधर इनके लिये मार-धाड़ लगी है

नकली शराब कोई बात ही नहीं
नकली गेहूँ भी बनने लगी है

दिन में सरेआम तो भई ऊँघेंगे
मुश्किल से रात को आँख लगी है

भीतर तो बिजनस के मोलभाव हैं
किसानों की संसद बाहर लगी है

24

रास्तों में हाथ कुचले पड़े हैं
लोग बस की राह कैसे खड़े हैं

बाढ़ आई बह गया मेरा वजूद
सीने में खपरैल के टुकड़े गड़े हैं

बास आई पेट से अनाज की
भाखानि[1] गोदाम में बोरे सड़े हैं

शीतलहरी से या गर्म लू से
मौत के हर हाल अपने आँकड़े हैं

क्यों नहीं करते इबादत सर झुका
आज के भगवान नंगे खड़े हैं

1. भाखानि = भारतीय खाद्य निगम

25

ज़िंदगी एक मोड़ खाकर रुक गई
कमर सीधी थी लिहाजा झुक गई

तेज आँधी वेदना की यूं बही
आँख भरने की बजाय सूख गई

कौन सी कविता बनी बदहाली में
ज़िंदगी की रही सही तुक गई

उम्र तीली थी ज़रा सी रगड़ से
क्या कहें मजाक में ही फुँक गई

लोग जाते थे जो गाड़ी खींचते
अपनी काया भी उसी में जुत गई

जिससे टूँगी लाश थी अरमानों की
वक़्ते गर्दिश वह भी चादर बिक गई

26

तल्खी और चीख भरी आवाज सुलगाओ
क्या बुरा है आज चिल्लाते हुए गाओ

खूब पीटीं तालियाँ अब तक तमाशे में
लो उठाओ हड्डियों का खेल दिखलाओ

ढक चुकी है देह थपकी की खरोचों से
दीन ज़ख्मों का बतौरे फख्र अपनाओ

क्या दिया खुद को भटकने के सिवाय यार
कम से कम मुन्ने को हाथ-पैर दे जाओ

दाँव खेलेगी रिसायत मिल के पूँजी से
मिल के सारे छातियों से खेत चिपकाओ

27

गर हम भी उतर आयेंगे जलने पे मेरे यार
कैसे बुझेगी शम्मा शब ढलने पे मेरे यार

वो आग का तूफाँ जो सीने में दबा है
दुनिया को जला देगा जलने पे मेरे यार

आँसू भी सुलगने के लिये सूख गये हैं
डँसने लगे हैं फूल खिलने पे मेरे यार

अब तक जो दु:ख छुपाये था हर हाल में बशर
कैसे लगा सुबकने कहने पे मेरे यार

इस शहर को समझो न हँसी-खेल तमाशा
रोता बहुत है घाव के दुखने पे मेरे यार

हाँ, सच तो हुआ करता है कुनैन से भी तीत
राहत बड़ी मिलती है चखने पे मेरे यार

28

अपनी सूरत के टुकड़ों को उठा लो मेरे यार
जिगर के ज़ख्मों को सड़ने से बचा लो मेरे यार

सुबह फिर उनकी मुट्ठी में कसी जाती है
दौड़ो सूरज को छाती में दबा लो मेरे यार

पत्ते-पत्ते पर पैगाम हवा लिख देना
कैद है जान की बाजी भी लगा दो मेरे यार

देखते-देखते सड़कों पर तनी ख़ामोशी
जुबाँ की लाश यहाँ से हटा लो मेरे यार

क्या हुआ शहर का हर घर परेशां है
अपने चेहरों को सलीके से सजा लो मेरे यार

29

दु:ख न डरते हैं न डराते हैं
सिर्फ शक्लें बदल के आते हैं

सहने को और भी बहुत हैं ग़म
इसलिये ईश्क से कतराते हैं

क्या जरूरत है हमें सुनने की
कौन-सा रोज़-रोज़ गाते हैं

सूखे सावन को गुजर जाने दो
अश्क आँखों से बहे जाते हैं

ख़्वाब अपने हों या तुम्हारे हों
देख सच्चाई ढहे जाते हैं

30

जोड़ जोड़ में दर्द गहरा है
क्या करें हकीम बहरा है

इस मर्ज का इलाज हो जाता
क़ैदखानों में सख्त पहरा है

हर रंग की दुकानदारी है
और ऊपर तिरंगा फहरा है

आगे नारों की भूलभुलैया है
वतन उस मोड़ पे आ ठहरा है

गाँव बह गये बादल जो फटे
सच सब्ज़बाग नहीं सहरा है

31

सिर्फ भ्रम है एक आईना होने का
किसे नहीं पता नाक कटी होने का

वैसे तो बहुत ऊँचे हैं जज़्बात उनके
आग देती है पता खरे सोने का

खूबसूरत लुभावने हैं वादे उनके
डर है तो सिर्फ सब्ज़बाग होने का

यहाँ देखा तो हर शख्स नंगा है
क्यूँ मलाल तुझे कपड़े फटे होने का

उम्र के साथ घड़ी की परछाईयाँ न गिन
वक़्त बाकी है अभी ज़िंदगी ढोने का

32

यहाँ बैठा है अंधेरा डरा-डरा
शोर है शहर में सूरज मरा-मरा

नज़र के वास्ते सारा जहान है खाली
आज की शाम पर दिल है भरा-भरा

सर्द झोंकों से कौन सवाल करे
बदन में आग क्यूँ लगती ज़रा-ज़रा

और इस बार भी फैला फरेब वादों का
सावनी अंधे को सूझे हरा-हरा

वक़्त के हाथ हैं खून से रंगे यारों
देखती आँख वो सपना बुरा-बुरा

33

ज़िंदगी खाली दिनों का सिलसिला है
उम्र की लंबाइयों से क्या मिला है

घास का पुतला खड़ा है खेत में
दिन दिहाड़े लुट रहा काफिला है

झांक कर क्या इन घरों में देखिए
आदमी की जात होने का गिला है

आप भी बाज़ार में कुछ बेचिए
इस जगह बाजारू होने में भला है

शौक से अब यह सफर भी देखिए
आम जनता की हवाओं का किला है

आज तक दीखा न देखा गाँव में
देखिए इस मुल्क में वो क्या बला है

34

आपसे ही आपके बारे हुए हैं हम
ज़िंदगी की मौत मारे हुए हैं हम

और भी कई रूप हैं यूँ तो जमाने के
क्यों दिनों-दिन शक्ल खोए जा रहे हैं हम

पेट फटता है ऐसी महंगाई देखकर
सुबह से दातौन खाए जा रहे हैं हम

एक ही चादर है, ओढ़ें भी, बिछायें भी
सर्दियों में बर्फ ढोए जा रहे हैं हम

फिर किसी दिन आपको खुलकर बतायेंगे
आजकल तो बंद हुए जा रहे हैं हम

35

पाँव चलते-चलते धूल हो गये हैं
जीते जीते ऊल-जलूल हो गये हैं

कोई तो रोजगार होता खाने कमाने का
दाँत तो अब जैसे फिजूल हो गये हैं

बेरहमी हमने भी देखी है जमाने की
लोग रोम-रोम बबूल हो गये हैं

गुस्सा है उन्हें तो हमें जिंदा गाड़ दें
कौन-सा अब हम त्रिशूल हो गये हैं

हमारे लिये हँस के दो बूँद तो बहे
हम सरे राह कुचले फूल हो गये हैं

36

सरकटे कंधों पर वजन भारी है
यह तमाशा रात दिन जारी है

झाँककर अपने जिगर में देखिए
क्यूँ धड़कता है क्या बीमारी है

बोल तो आते हैं अब भी मगर
गले की अपनी अलग लाचारी है

हम घिसटते जा रहे हैं दिन-ब-दिन
सुना दौलत की उल्लू सवारी है

हाथ उठ जाते अपने इमान पर
यहाँ हर किस्म की खरीददारी है

37

कुछ नहीं सूझता आसमाँ देखते हैं
अपनी छत पे पाँवों के निशाँ देखते हैं

हमें क्या पता लोग कहाँ देखते हैं
हम तो लोगों की बदली जुबाँ देखते हैं

एक ही आलम है बदहवासी का
धूप की चादर में छाँव देखते हैं

कोई नहीं पूछता तारीफ अपनी
लोग चेहरों के पहले मकाँ देखते हैं

हलक सूखे निगाहें आँसुओं से तर
वही मजबूर चेहरे, हम जहाँ देखते हैं

38

आकाश बांट दिया खांचों में
हकीकत उलझ गई जांचों में

रब ने तो एक ही बनाई थी
ढल गई जुदा जुदा सांचों में

मैं मोमिन की या मवाली की
नाचती एक सी कांचों में

नालियाँ पन्नियों पाट डालीं
कचरों के ढूह कई ढांचों में

सुराज गाँव गाँव पंचायत
युधिष्ठिर एक नहीं पाँचों में

उबाल किस तरह आए जसबीर
ताप ठंढा पड़ा जब आँचों में

39

चल तू भी पत्थर उठा दिल
मजनू की और भी बुरी गुजरी

आँखें रूकें तो हम ख्याल करें
ये दिन गुजरा कि शब गुजरी

न जा मेरी महफिल से यार
बहुत वीरान तेरे बिन गुजरी

शम्मा कहती है परवाने से
तेरी चाहत में मैं जल गुजरी

शरीफ लोगों को मुश्किल गुजरी
ज़िंदगी मौत से तिल-तिल गुजरी

किसे कहते हो दीवाना जसबीर
तू देख तेरे साथ क्या गुजरी।

40

अब जो मेरे घर वह आया करेगा
कभी दीवार को, खुद को कभी देखा करेगा

ख़बर किसको थी आग लग जायेगी जीने की
कभी चराग जलायेगा कभी फूका करेगा

काश चेहरे पे वो देख ले हल्की रौनक
भला सोचेगा दिल की, गैर से पूछा करेगा

जलाया आशियाँ कि चमन में रौनक-उजाला हो
कभी बरबादियों पे होके खुश रोया करेगा

कहीं जसबीर की चुनरी पे कोई दाग न लगे
बहेंगे आँख से आँसू जिगर धोया करेगा।

41

कहाँ जा छुपा दिन सरकते-सरकते
कहाँ आ गये पग बहकते-बहकते

रिंदों ने तोड़ी जो भर कर सुराही
जामों से रह गई छलकते-छलकते

परिंदे जले आशियानों में दुबके
फूलों से लिपटे बिलखते-बिलखते

ऐ हुस्ने-शमा जल भी उठो अब
सुबकती रहे शब सिसकते-सिसकते

कोई दर्द जसबीर को दे रहा है
ग़ज़ल कह गया जो अटकते-अटकते

42

सुबह-सुबह टकराते लोग
चौकों पर चकराते लोग

जामों-से छू जाते लोग
मुर्गों से भिड़ जाते लोग

कारें जितनी लंबी हों
साइकिल से चिढ़ जाते लोग

सड़कें चौड़ी सँकरे लोग
ट्रैफिक में घिर जाते लोग

घर-घर करते जिनगी बीती
घर से ही घबराते लोग

पूजा करते मीलों दूर
दीनों से कतराते लोग

अपनी अपनी डफली लेकर
रागों से पिटवाते लोग

43

तुम्हें पाक जाना था सजदा किया था
अपना बेगाना कहाँ तय किया था

कोई तीर तिरछी नज़र से चला था
जिगर दुख रहा था मुँह पर सिया था

लगी आग घर में शहर जल रहा था
लहू था जो आँसू जुबाँ ने दिया था

कहे तुझको अपना मरेगा खुशी में
रहूँ आपका ही क्यूँ कह दिया था

हसरत रहेगी जसबीर जाँ में
कभी न बिछुड़ने का वादा लिया था।

44

इक रुख लगाया तो था, क्या हुआ
प्यार आजमाया तो था, क्या हुआ

बहुत पहले सदा गूँजी थी खला में
बहुत पहले बुलाया तो था, क्या हुआ

बिजलियाँ चमकी थीं बदला था मौसम
रुख से पर्दा हटाया तो था, क्या हुआ

आग जिसने लगाई कहाँ गया वो शख़्स
बुझाने रकीब आया तो था, क्या हुआ

रंजिशें सौ वादा जसबीर से इक
कर ऐतबार खुशी से मरा तो था, क्या हुआ

45

प्यार है इसलिये शुबह करता हूँ
तुमसे जीता हूँ तुम पे मरता हूँ

समझो इल्ज़ाम या उल्फत अपनी
दीवानी दीवानगी से डरता हूँ

शम्मा परवाने से फरयाद करे
आग दिल आँसुओं में भरता हूँ

चाक दामन में धूल डूबा सर
दर-ब-दर यार यार करता हूँ

कभी तो पलक झपक लो दिल की
बुतपरस्ती से प्यार करता हूँ

46

निगाहें झुक गईं मिलते खुद ही
दिल की हर बात छुपाये रखिये

ये कदम बढ़ेंगे अँधेरों में भी
बेशक चिराग बुझाये रखिये

किसे ख़बर नहीं कि दीवाना
लाख मेरा नाम दबाये रखिये

कल आप ही बुलायेंगे हमें
आज मुँह चाहे घुमाये रखिये

आपकी जिद के हम हुए कायल
इसी तरह दिल से लगाये रखिये।

47

प्यार पल भर तो निभाया होता
कभी तो मुझको बुलाया होता

सिर्फ पानी था फट के बह पड़ता
दिल अगर और दबाया होता

बड़ी हमदर्द घर की दीवारें
सर किसी फूल टकराया होता

एक सहरा बचा है आँखों में
मुझे इतना न रूलाया होता

भूल जाना तो बहुत मुमकिन था
पर कभी याद तो आया होता

48

सड़क के साथ कौन रोता है
कहो दो हाथ पर इनारा है

ऊँची कोठी है उनकी हालाँकि
लहू सबके बदन का खारा है

इस जगह जोर से मत बोलो
यहाँ बीमार शहर सारा है

गुनाह छुप गये दीवारों में
वरना हर गली लहरतारा है

सजायें काटता है घर किसका
और किसका सजा चौबारा है

49

उतना पानी नहीं जितना भर गया है
शहर अपने खौफ से खुद डर गया है

कूड़े के ढेर पर औंधा पड़ा है शख्स
मरते दम अपनी जगह सर कर गया है

साफ सुथरी तेरी प्यारी हरी दिल्ली
घास खुशियों की मगर कोई चर गया है

ईश्क में बेखौफ डूबा जो बशर
उफनते चिनाब मटकी तर गया है

कल करोगे, कल किया, आज क्या है
जसबीर बस इक साँस लेते मर गया है

50

हम हाथों पे अपनी छत संभाले जाते हैं
उनके सिर कई तल्ले बने जाते हैं

ऊपर देखने को गर्दन इजाज़त नहीं देती
वे नीचे ऊपर देखने को आते हैं

हमें सर्दियों लकड़ी जुटानी है
वे अब बर्फ से खेलने जाते हैं

हमारी नाक को कोई खुशबू नहीं आती
वे हमसे सटने में घबराते हैं

हमारा जिस्म उनके पास गिरवी है
इसी से तरस खा हक जताते हैं

51

यही इक बात भुलाई न गई
उम्र पूरी हुई जुदाई न गई

मुझसे मेरे रकीब अच्छे हैं
वहम की कोई दवाई न हुई

वफा पे उनकी रोऊँ या हँसूँ
अदा से कहते हैं आ ही न गई

क्या शिकायत हो जहाँ आदत है
कटी जैसे वो सुनाई न गई

मेरा ख्याल उनको कब आयेगा
कयामत किसी हाल बुलाई न गई

52

चेहरे टपक-टपक कर गलियों में छा रहे हैं
ये कौन मर गया जो मातम मना रहे हैं

इस साल की बनिस्पत बीता हुआ हरा था
ये क्यों दिहाड़े दिन-दिन मुरझाये जा रहे हैं

शहरों की पीठ पर फिर खंजर धंसाये किसने
क्यों लोग बूचड़ों से दारु करा रहे हैं

रोज़ों के बाद भी तो रोज़े मनाये हमने
क्यों नाम पर हमारे दावत खिला रहे हैं

जिस हाल थे जनम से उस हाल हैं अभी भी
क्यों हाल पर हमारे झण्डे लगा रहे हैं।

53

साँझ की अजान में ढिबरी जली है
फूस की छत मिट्टी से आ मिली है

लाँघ कर ड्योढ़ी खड़ा हूँ बीच में
कांपती दीवार की जिंदादिली है

मैं कहाँ बैठूँ इस वीराने में
इसमें मुर्दाघाट की चुप्पी खिली है

खूब पहचानता हूँ शक्ल को
नाक के चारों तरफ गोबर मली है

कौन पकड़े यहाँ सैय्याद को
शहद की मीठी कटोरी विष-मिली है

54

न स्वाद के लिये न जीने के लिये
हम खाते हैं पेट भरने के लिये

न जीने के लिये न मरने के लिये
हम हैं सड़कों की नुमाइश के लिये

न चलने के लिये न रुकने के लिये
हम उठे हैं दावत की पत्तल के लिये

न कहने के लिये न सुनने के लिये
हम मसाला हैं इलैक्शन के लिये

न पाने के लिये न खोने के लिये
हम जनमें हैं तरसने के लिये

55

नाक तक दर्द में डूबे हुए हैं लोग
ज़िंदगी के नाम से ऊबे हुए हैं लोग

रेंग कर सड़कों पे अपने शहर से
झुग्गियों में रात उकड़ूं हुए हैं लोग

बीनते लोहा व लक्कड़ दर-ब-दर
रोटियों की मार से टूटे हुए हैं लोग

राह तकते हर बदलते रंग की
ट्रेन से पहले पहुँच छूटे हुए हैं लोग

ये किसी से क्या कहें न पूछिये
खुद अपने आपसे रूठे हुए हैं लोग

फैसला करिये यहाँ की दौड़ का
पांव में बेमेल के जूते हुए हैं लोग

खिलखिलाते हैं नशे में यूं मगर
सच कहें तो जिगर में टूटे हुए हैं लोग

56

जंगलों ने नकाब ओढ़ी है
गांव भूखा शहर कोढ़ी है

नगर अंधेर है बत्ती गुम है
दुनिया दूर-दूर दौड़ी है

राजा अंधा रानी कानों की
मोटी मुँह से, जुबाँ की चौड़ी है

काम ज्यादा करो और बातें कम
गोया यह घास चरती घोड़ी है

शाम रंगी है बदतमीजों की
भला इतनी तमीज थोड़ी है।

57

खेत सूखे बादलों से भर रहे हैं
गांव काला खांसते हैं मर रहे हैं

हर शहर जम रही बेरोजगारी
इसलिये फुटपाथ चौड़े कर रहे हैं

बस्तियों में खौफ फैला जोर का
क्यों सभी अपने घरों से डर रहे हैं

कौन सी छाया पड़ी कल रात जो
पांव कंधों पर उठाये फिर रहे हैं

धूप में सब पेड़ हैं झुलसे मगर
कांपते हैं दांत किटकिट कर रहे हैं

58

हवा में पानी की बूँदें हैं
चेहरे खुले आँखें मूंदे हैं

आसमाँ तार-तार बिखरा है
बदरा फूल-फूल गूंदें हैं

धरती फैली है सौगात पाकर
हवायें पोर पोर सूंघे हैं

पत्ता-पत्ता खुशी में है चहका
परिन्दे गोल-गोल घूमे हैं

फिजां तालब है भीगी भीगी
घटायें चुपके झुकके चूमे हैं

59

तेरी ख़ामोशी में एक ग़ज़ल नजर आती है
वक़्त के बाद भी वो शक्ल नज़र आती है

हालत पहले कभी इस कदर गमगीन न थी
आँखें रोती है और लब पे हँसी आती है

तुम्हें आवाज़ दे वापस तो बुला लूं लेकिन
होंठ कँपते हैं जुबाँ बोल नहीं पाती है

है कोई बात जो चुभती है जिगर में जाकर
बात करता हूँ बात संभल नहीं पाती है

तेरी चुप्पी से मुझ कोई शिकायत ही नहीं
बात मुँह बंद किये भी तो हो जाती है।

60

आकाश का जो टुकड़ा झांकता है
चिमनियों की धूल फांकता है

धंसी आँखों में दांतों की लम्बाई से
मुल्क हर माह कीमत आंकता है

बच्चों की जमात का इक बूढ़ा
मुल्क से मूढ़ता हांकता है

फसल के बीच खड़ा नर कंकाल
जान से कफन ढांकता है

अपने हाथों से किसी वर्दी पर
जंग कड़वे निशान टांकता है

61

बीच तालाब में मछली मरी है
सरहद की सड़क गड्ढों भरी है

कौन रुकता है थोथी अपीलों से
गार्ड के हाथ में झण्डी हरी है

ढूंढ ही लेंगे अंधेरे लालटेन
इसलिये आकाश से बिजली गिरी है

सब्ज़ काई से ढंकी दलदल यहाँ की
मत समझना बिछी दामी दरी है

कब हुई संतान अंधों की सुजाखी
भूख करती द्रौपदी से मसखरी है

62

बसंत ने दिये दरख़्तों को नये लिबास
आमों को बौर, धूप को और मिठास

उनकी दूरी को क्या बयाँ कीजे
हर घड़ी दीखते जिगर के पास

सूखे पत्तों की दास्तां सुन कर
रातें ख़ामोश दिन हुए हैं उदास

चाँद सन्नाटे पर फेरे ऊँगली
दर्द ठहरा चल रही चाँद की प्यास

गर्क़ हो सब फना हो जाये, तो भी
भोर के दामन रहे जसबीर उजास

63

इतनी उलझी कि बिन छोर हो गई
ज़िंदगी इस ओर उस ओर हो गई

इतनी ख़ामोश उदासी थी यहाँ
धुकधुकी जिगर की शोर हो गई

लबालब उजाला भरा चाँद में
यह रात है कि भोर हो गई

बहुत जोर नींद में चीखा बशर
आँख खुलते जुबाँ चोर हो गई

महुआ टपकता रहा रात भर
बादे-सबा मय-खोर हो गई

64

आओ कहीं बैठ पीयें चाय
गड़े मुर्दों पे डालें हाय

गन्ने का रस गर्मी की लू
मौसम! नज़र न लग जाये

वो भिड़ा आदमी जल्दी में
औरत से राम ही बचाये

सिनमे की खिड़की से पूछ
भीड़ अपने मुँह क्या बताये

हाथ को हाथ-सा देखे ना
कंगन को आरसी दिखाये

65

मैं ताउम्र तुमको देखूंगा
तुमको देखूं तो उम्र बढ़ती है

बेटी अंगूर की उतरती है
जवानी पुर नशे-सी चढ़ती है

जुबाँ पढ़ती तो आँख सुनती है
जुबाँ सुनती तो आँख पढ़ती है

जियाँ तारीफ बदजुबानी है
जुबाँ ख़ामोश लफ़्ज गढ़ती है

कुसूर दिल का या निगाहों का
कैस पे दुनिया दोष मढ़ती है

66

हमें आस पे जीने दो
चादर के सूराख सीने दो

कबीरा ने धरी है तो
धूप में ही रहने दो

एक दिन हंसेगी भी
जी भर अभी रोने दो

ये दाग हैं पसीने के
इन्हें और पिसने दो

खून में रंग जायेगी
अश्क आँख बहने दो

67

अँधेरों में डूबे हुए रास्ते
पूछेंगी गलियाँ सवाल आपसे

जिसे है मुहब्बत इस मुल्क से
भटके है फाके के दिन काटते

निकले थे घर से अकेले मगर
जुटी भीड़ चलने को संग आपके

ऐसी तरक्की का क्या फायदा
सुकूँ बिक गया खुशी चाटते

बड़ी देर से हूँ किनारे खड़ा
इतनी भी दूरी नहीं आपसे।

68

चादर की तरह ढँक लिया है तुम्हारी याद ने चारों तरफ से
दिल को अब कहाँ चैन कि सोचे परे तुमसे

रात ढल चली, चला आया चाँद पीछे महुआ के
रिस-रिस टपकता है खूँ जिगर का आँखों से

हमने फरियाद की थी विदा कहते तुम्हारे हाथों के लिये
किसे ख़बर थी घोटेंगे गला उन्हीं हाथों से

कि किस तरह मिटेंगी लकीरें दर्द की इन आँसुओं से
जो कतरा गिरता है हर ज़ख्म होता हरा फिर से

हिंद पे जिन्हें नाज़ था किसानों के दम पे
अब वो नहीं रहे कौन उठाये इन्हें सड़कों से

69

दर्द कहाँ, दवा किसकी किये बैठे हैं
हम तो दीवानों में नाम दिये बैठे हैं

एक उनसे ही थी वफा की उम्मीद
और उनसे रुसवाई लिये बैठे हैं

चाँद बिल्कुल नज़र नहीं आता
चिलमनी दीदार किये बैठे हैं

चार दिन ये दिये उन्हीं के थे
उन्हीं पे वार दिये बैठे हैं

संग भी खीस्त भी है दिल अपना
दर्द भर होंठ सिये बैठे हैं

70

जब तलक आसमान दिखता है
कोई खोया निशान दिखता है

परिंदे लौटते हैं घर को जब
दिल इक बियाबान दिखता है

कोई भी मिलने की सूरत न रही
बेसूरत सारा जहान दिखता है

तुझसे लगता है फिर कभी न मिलूँ
प्यार महज़ एहसान दिखता है

झूठ के अंग तो नहीं होते
सच से पहलवान दिखता है

71

शहर हर वक़्त वक़्त खाता है
गाँव हर खेत वक़्त उगाता है

गाँव जो वक़्त हगता रहता है
शहर खाकर डकार जाता है

गाँव में आदमी जगता-सोता
शहर में आदमी खो जाता है

शहर सड़कों पे ऐसे चलता है
रास्ता गाँव से हट जाता है

गाँव आखिर जहाँ पर रुकता है
शहर उस जगह घूम जाता है

72

बोल के पहले तोल तो नहीं लगेगी वाट
मोल-तोल की गोल माल क्या मंडी क्या हाट

जनता खुलते खुल गये सड़क राजसी ठाट
किस्तों का भुगतान कर उल्टे लटकें जाट

खड़ी मलाई घप्प बैठ तू जूठे पत्तल चाट
नीचे धुआं और बुट्ट ऊपर ले चल खाट

पक्के गये परदेश वो काहे जोहे बाट
गुमटी हो गई बंद तो बड़े खुले हैं माट

दिल को दिल से साट गिल को गिल से काट
जिंदा रहें शहीद तो जलती दिल्ली लाट

73

कुछ हादसों के बाद ऐसा लगा मुझे
यह ज़िंदगी नहीं जो कभी प्यार से कटे

तेरे आने से ग़म कुछ और बढ़ गये
यह दर्द लाइलाज शायद ही अब घटे

किससे कहें कि रौशनी अंधेर हो गई
सूरज कोई बदले तो कहीं खौफ ये हटे

खेतों में है सैलाब कई मेघ हैं फटे
छाती किसान तान के सरहद पर हैं डटे

नाटक है मंत्रियों का जसबीर जा रहे
खुलेंगे कच्चे चिट्ठे कानूनों से सटे।

74

सब नहीं तो यार कुछ लोग ही बोलें
पूरा नहीं कभी तो थोड़ा सच ही बोलें

माना कि आज कूड़ ही परधान है लालो[1]
काली न सही रात को रात तो बोलें

गर जुबानें क़ैद कर लीं यहाँ शैतान ने
हक औ' ईमान क्यों बाट संग तोलें

वह शंहशाह है तो फ़कत इसी दौर का
उसको पूरी सदी का अल्लाह क्यों बोलें

न बतायें किसने फैलाई यह दहशत
सुर्खियों के दाग सन्नाटे से धो ले

1. लालो= गुरु नानक का एक शिष्य

75

रोज़ का आना जाना है
किसका कौन ठिकाना है

धंधा कोई और करे
जग को और दिखाना है

तेल की टंकी खाली है
दिल्ली दूर पुराना है

दुनिया गोरखधंधा है
जन्नत टाल बहाना है

बर्फ की सिल्ली रही ढँकी
गर्मी ने पिघलाना है।

76

हरसूँ खंडहर खड़े हैं बहुमंजिल
ढूँढ़ ले अपना मकान सपनों का

किसी की नींद में सपनों की धमाचौकड़ है
किसी की आँख को इंतजार सपनों का

धूप में पक रहे किसी के बाल शहज़ादे
किसी का साल साल मर्तबान सपनों का

भला भविक्ख क्या होगा गरीब-गुर्बे का
झुलस के रखा है जब वर्तमान सपनों का

आखिरी वक़्त तक पढ़ते रहेंगे सपने भी
खुलेगी आँख जो हो इम्तहान सपनों का

तालीम पाके ये मेहनत को हक दिलोयेंगे
अभी बच्चे हैं क्यूँ इम्तहान सपनों का

77

मौसम का नाजायज़ फायदा उठा रहे हैं
लोग बादलों के पर्दे बना रहे हैं

कीमतों ने डाल दिये मुँह पर ताले
नाक लोहे के चने चबा रहे हैं

मुद्दत हुई मर गई थी गुलामी बूढ़ी
आज तक उसकी अर्थी उठा रहे हैं

जमाने भर में ढूँढते हैं वफा
बीवी से आँख तक कतरा रहे हैं

सीख पाये खुद पे हँसना जो जसबीर
रोते आये हँसते-हँसते जा रहे हैं

78

साकी मुझे एक नहीं सैंकड़ों ग़म खाते हैं
पीने दे मुझे मैं को मै को मुझे खाने दे

पीता हूँ तो इस जी की प्यास जी उठती है
साकी मुझे शीशों के शहर से जाने दे

छाये हैं इस तरफ भी उस तरफ के से बादल
बदरा को बरसने दे हियरा को सुखाने दे

बोलो न शराबी तुम मैखाने में गिरने से
कदमों को बहकने दे तबीयत संभल जाने दे

वहशी बना है साकी दीवानगी का आलम
मैं को मुझे खाने दे शब को मुझे खाने दे

79

अपने ही घर में हुआ हूँ अकेला
नगर ज्यों लगा हो दीवारों का मेला

फूलों पे पैरों की बेचैनी देखो
काँटों को इतनी मुहब्बत से झेला

कैसे जियेंगे नज़रों से गिरकर
किस्मत ने नज़रों के नीचे धकेला

तुमको मुबारक महफिल की रौनक
हमें मातमी अंधेरों का रेला

बंहगी उठाई घर से निकल गये
गुरु जी है मेहनत उदर जी हैं चेला

बैठे निकम्मे फुलाये हैं गोगड़
खटाऊ बंदे को सारा झमेला

लगेगा निशाना गुलेल से क्या
बिकाऊ रोड़ा भुराया ढेला

जीतेगा तू चित, पट मैं ही हारूँ
लगाया बढ़िया पूँजी का खेला

न चैन दिन को न रात राहत
चलाया रिक्शा ढो-खींचा ठेला।

80

संसद का बोझ किसानों के सर
पेंशन खा नेता हुआ है अमर

निगाहों से मेरी अगर देखते
हुस्न के जादू का होता है असर

हलधर का दिल न दुखाते अगर
वबा का कभी ना बरसता कहर

दो गज की दूरी भी क्या फासला
कोरोना फलक पर जाता ठहर

थालियाँ पीटता मुल्क साथ था
ले मौके का फायदा घुसाया खंजर

पास कराये तीन काले कानून
पीटने को छाती लगाये हलधर।

81

सुन के दिल क्यूँ उदास हो आया
तू बहुत दूर से मिलने आया

उसे पहचान है परिदों की
अहदे पैगाम कबूतर लाया

ऐसी बन आई थी कि क्या बनती
बात तेरी पे मेरा नाम आया

गुलों में रंग हवाओं में शोखी
बहार आई कि मेरा यार आया

मकतले यार में रूसवाई क्यों
हर घड़ी पड़े जन्नतों का साया

82

बहुत दूर तक जायेगी तेरी याद
बहुत देर रूलायेगी तेरी याद

मैं तनहा हूँ परवाह नहीं
बहुत साथ निभायेगी तेरी याद

चाँद है, सिर्फ इक सितारा है
सारी रात जगायेगी तेरी याद

आँचल मैला है सौ गुनाहो से
पाक से पाक है तेरी याद

उम्र भागेगी नब्ज थम लेगी
बाद मेरे बच जायेगी तेरी याद

शाख सूखेगी गुल मुरझायेंगे
पत्ता-पत्ता लहरायेगी तेरी याद

अश्क तारी फिजाँ सन्नाटा
ताफलक भर जायेगी तेरी याद

83

नामों के चक्कर में अंधे बने हैं
लोगो! ये खाने के धंधे बने हैं

एक नूर से उपजा है सब जग
उसी के बनाये ये बंदे बने हैं

खुदा ने सिखायी सब को मुहब्बत
किसकी गरज से ये दंगे बने हैं

पहले लड़ाये फिर मरहम लगाये
ऐसे मसीहा के फंदे बने हैं

लहू है वही तो नफरत है क्यों कर
गरीबी से अपनी ये गंदे बने हैं

मरते है हम-तुम लुटते है हम-तुम
उनके तो दिन सब चंगे बने हैं

हमारे अंधेरों से उनकी दीवाली
उनकी अय्याशी को चंदे बने हैं।

84

बोते हो तो काटोगे, जो काटना है बोओ
इंसाँ बने हो या रब, इन्सान पहले होओ

मिट्टी से जो निकला है, सोना है या माटी है
मिट्टी में जा मिलना है, माटी न अपनी खोओ

कल जो मिला था मुझसे आज तो नहीं था
कल भी मिलेगा जाओ यूँ आज को न रोओ

ठहरो यहाँ रोती हैं इस वतन की हवायें
रूहें कहाँ मरती हैं कब्रे-शहीद धोओ

तेरी सलामती की माँये करें दुआयें
जसबीर दौर बदलो ग़ज़ल न पिरोओ

85

नाहक न हक हलाल करो
कुछ ज़िंदगी का ख्याल करो

उनको छूकर हवायें जो चलतीं
वही बेलाग इस्तेमाल करो

जहाँ देखो है कोई छाँव खड़ी
वहीं पे पेड़ की संभाल करो

उनकी जानिब न इस तरह देखो
गुलाबी चेहरा है क्यूँ लाल करो

मिला नहीं तेरे माकूल ही नहीं
मिले का किस कदर मलाल करो।

86

चाहता क्या है तू दुआ करना
सभी को यक्ष, इस जगह मरना

नये इस दौर के सिकंदर हैं
फलक भी चाहते हैं फतह करना

जा रहे नक्शे-पा दीखे हैं
आती आवाजों पर निगह करना

काट डाले दरख्त-पत्ते ओ' गुल
चाहता मौसमों को जिबह करना

गर्चे मय्यत-सा ख़ामोश था कल
आज हर दीन से जिरह करना।

87

दर्द जब कद से बड़ा हो जाये
आदमी जद से खड़ा हो जाये

घर की दीवार पहाड़े लिखे
बचपना सीढ़ियों में खो जाये

लिख लो हालाते-गम सुनाते हैं
पत्थरों की भी रूह रो जाये

जागते थे कि रात सो जाये
जागते हैं कि सुबह हो जाये

उनके घर भी कभी उजाला हो
वहाँ सूरज न स्याह हो जाये

88

तुझको देखूँ तो नशा चढ़ता है
बात कर लूँ दो गुना बढ़ता है

कभी जो सर पे बोलता है या रब
ग्रंथ - गीता - कुरान पढ़ता है

पाक कलमा किसी किताब का या
सबाबे-यार खुदा गढ़ता है

रक्खो जन्नत मैं चला हूँ दोज़ख
वायज़ इल्जाम झूठे मढ़ता है

गुरुरे-हुस्न ! लो सज़दा मेरा कुबूल करो
कौन-सा रोज जवानी का रंग चढ़ता है

89

थी मिली बूँद-झलक मुझको बहुत है
प्यास से टूटते चातक को बहुत है

कौन जीता है जो जीऊँगा जुल्फ
आखिरी दम जो हुई सर सो बहुत है

चाक-दामन फिरा करता था मारा-मारा
रुस्वा दरो-दीवार दुनिया से, बहुत है

मैकदे से जो निकल आये हो ऐसे दोस्त
होश उड़ जाये लबों से इक घूँट बहुत है

किसके हमदर्द, कैसी बेरुखी, किससे ईश्क
दिल बहल जाये किसी हाल बहुत है

फलक अपना हवा अपनी वतन भी अपना
मिले गज़ दो ज़मीं कू-ए-यार बहुत है।

90

वक़्त बीमार है किसको सजा देते हो
खुद से लाचार है जो उसको सजा देते हो

एक इज्जत थी शख्स वो भी अपनी बेच गया
बची है आबरू वो भी छीन लेते हो

छाँव मेहमान है पल की न सही, कल तक की
धूप आईने घुमा क्यूँ खदेड़ देते हो

खराब मौसम में लापता जो घर से हुआ
ढूँढ़ने के लिये दुनिया को ख़बर देते हो

साथ इक ऊँगली में थे, तो न कोई बात बनी
पत्थरों को अलग करने की वजह देते हो।

91

खूबसूरत हो बहुत तेरे शहर! क्या कहने
भूल से पहुँचा, मगर जाऊँ कहाँ अब रहने

बुतों में सादगी, ग़ज़ब का भोलापन है
कोई जो प्यार के दो बोल कहे, क्या कहने

हमसे जुदा भी नहीं, साथ हमारे भी नहीं
आँख भर आई, दिल यूँ लगा खुद ही बहने

और चौड़ी हो सड़क और तेरा हुस्न बढ़े
दुकान अपनी किसी कोने दे पड़ी रहने

वक़्त आयेगा शहर तुम्हीं उठाओगे मुझे
अभी तो दर्द तैंने देने हैं मैंने सहने

92

शक्ल किसकी, देह यह किसकी देखो
बजट के घाटे में पिसती है गिरस्ती देखो

धूल दुनिया की आँखों में उड़ी आती है
शहर के दो बड़े रंगबाजों की कुश्ती देखो

आप जो भी जुबाँ बोलते समझते हैं
उसी पर उनकी सरपरस्ती देखो

लो चली लाद चीटियाँ जसबीर
ख़ाक में मिल गई हस्ती देखो

वीडीयो के लिये मिल सकता ऋण
भूख खाने को तरसती देखो।

93

फिर कहीं और ही पढ़ी होगी
ख़बर अख़बार से बड़ी होगी

ज़र्द आँखों में जो चलती है
नब्ज हर साँस में खड़ी होगी

ज़िंदगी मौत के घाट उतार
देह चुप नाव-सी अड़ी होगी

सिरहाने धीरे या जोर से बोलो
मीर को नींद कब पड़ी होगी

ज़िगर राहत, रूह चैन आये
दोस्त वह आखिरी घड़ी होगी।

94

अर्से से तस्वीर गुमी-सी लगती है
आँखों में इक कमी-कमी-सी लगती है

चाँद का चेहरा खुदा-खुदा-सा लगता है
तेरी सूरत भली-भली-सी लगती है

खत की पेटी रोज़ टटोला करता हूँ
हर चिट्ठी क्यूँ खुली-खुली-सी लगती है

कभी ज़िंदगी तारूह आन डराती है
कभी मौत भी मरी-मरी-सी लगती है

काले बादल जब धरती पर छाते हैं
ज़ुल्फ तुम्हारी घनी-घनी-सी लगती है

95

आपकी बात क्या करे कोई
आतिशे-ईश्क जल मरे कोई

खुद जो मौसम बना है दीवाना
अपनी हालत का क्या करे कोई

आ के नजदीक रुक गया कासिद
इस तरह यार न मरे कोई

रीत देखो तो इस जमाने की
याँ करे कोई और भरे कोई

रब्ब, शैताँ, न ही बंदे से
डरे तो जान से डरे कोई

96

रात बीती मगर सहर न हुई
उम्र कड़वी हुई ज़हर न हुई

वो न आये कह के आयेंगे जरूर
उनसे वफा न हुई हम को ख़बर न हुई

आखिरी दम तक एहसास बरकरार रहा
वो आ रहे हैं आँख अश्क से तर न हुई

रूह पे वजन हर साँस बढ़ता ही रहा
शक्ल धुँधलाती रही याद बेअसर न हुई

इससे पहले कि दो घड़ी को आ जाये सुकूँ
उनसे नज़र तो हुई उनकी नज़र न हुई।

97

हमें आसमान ने उजाड़ा है
ज़िंदगी दु:खों का पहाड़ा है

हर कदम साँस को झगड़ते हैं
यह शहर है या अखाड़ा है

कभी नदियों ने घर कुचल डाला
कभी सूखे ने धर पछाड़ा है

कभी भीगे कभी ठिठुर के कटी
खुदा का हमने क्या बिगाड़ा है

हाथ हँसुआ मुँह में भात के कौर
सफ़र चलने को संग जुगाड़ा है

98

एक दिन सबको नींद आती है
एक दिन मैं भी सो जाऊँगा

तुम इधर आ न सको, होगा पर
मैं इसी राह चला जाऊँगा

यहाँ मिले न कहीं और सही
ढूँढता दूर निकल जाऊँगा

चैन इस उम्र में मिला न अगर
यहाँ से बेचैन चला जाऊँगा

किसे फुर्सत है रुके, गौर करे
सामने दीवाना चला जाऊँगा

99

बस रंग ही नहीं फिरे हाथ फिरे हैं
गालों की बात क्या करें ओठों से घिरे हैं

आँखों के रंग जुल्फों से मिल नहीं पाये
कहीं बिजलियाँ गिरीं कहीं मेघ घिरे हैं

(शह) तूत तल जमीन तक रंगीन हो गई
पागल भये हैं मन, हाथ सिरफिरे हैं

एक ही हसीन रुख बेछुआ बचा
होली के भाग लैला के दिन रैन फिरे हैं

अब तक कपोल घिर नहीं पाये गुलाल से
आओ जसबीर के दो अश्क गिरे हैं।

100

एक जून खाता शायर हाँडी ही इकडंगी[1] है
मुंडी खूब हिलाता है, ना समझे तो पंगी है

कुंडी से दरवाज़ा बंद, बीमारी तो तंगी है
फुनगी-फुनगी नंगी है, गो दुनिया बहुरंगी है

हंस अकेला जाता है ना बेली ना संगी है
सालों एक ही धाम रहा पक्की जाँ का जंगी है

झाड़ू से उकताया है पुश्तों से जो भंगी है
तुझको देख बहलता दिल तबीयत कैसी चंगी है

जनता सड़कों पर बैठी संसद क्यूँ बेढंगी है
बहरी तो अंग्रेजी थी राजनीति भिखमंगी है।

1. इकडंगी (पंजाबी) = एक जून, एक बेर

101

एक ही तन है कितना दर्द समेटे है
एक ही मन है कितना अहं लपेटे है

एक ही जी कितने जंजाल उठाये है
एक ही प्राण कितने ध्यान उमेठे है

एक ही साँस साँसतों जैसी
एक ही हवा कित्ते तूफान चपेटे है

एक ही जीभ है कितने ज्ञान बखाने है
एक ही नाक है कितनी गंध रपेटे है

एक ही जीव कितने भवसागर
एक ही ब्रह्म है कितने घाट घुलेटे है।

102

बहुतों के बहुत सारे पैगाम आये
तुम्हारा आये तो आराम आये

एक उफ न की सीने ने रुककर
दुख-दर्द आये ग़म तमाम आये

जो राहत तुमसे, तुम्हीं से होनी है
क्यूँ दुनिया-भर का सरंजाम आये

बातें झटके से रुक गईं थीं जो
चल पड़ेंगी जो वही नाम आये

गैर क्यूं, हमारी तरफ वही देखे
कब नज़रों को रुख का ईनाम आये।

103

दिन बीता रात बीतती है
ज़िंदगी हर वक़्त रीतती है

किससे कहें जो गुजरती है
मौत हारती है कि जीतती है

आये थे कि सब बता देंगे
दम घुटे आवाज़ चीखती है

फूल रोयें कलियाँ बिसूरती
चमन की छाती पर जो बीतती है

कल कहाँ थे आज है कहाँ
जीस्त-गाड़ी साँस खींचती है।

104

कोई कभी न मरे ऐसा कहाँ होता है
तारों दीपों पहाड़ों का जनम होता है

हवा-पानी-धूप रंग भी खा जाते हैं
घर के दरवाज़ों आँखों का पता होता है

खोखले दिन हुए रातों में कुछ भरा ही नहीं
वक़्त बढ़ता नहीं बेवस्ल रुका होता है

ऐसा चलना क्या जो दिल कोई मचला ही नहीं
राह बनती है जो कोई राहगुजर होता है

फज़िर से पेश्तर जसबीर जगा बैठा है
बड़ी किस्मत से दीदारे-यार होता है।

105

आकर राजधानी के तट पर हलधर ने ललकारा है
दूर हटो, दूर हटो ऐ पूँजी बहादुर, हिंदुस्तान हमारा है

खून चूसने वाले गोरे कैसे कह दें छोड़ गये
अपने ही बनियों ने अपने ही लोगों को मारा है

खून पसीना एक करे जो मेहनत की रोटी खाये
दूध उसी में, दूजे का हक रक्त की हिंसक धारा है

जनता की इज्जत-दौलत जो सरेआम नीलाम करे
पूँजी की बेशर्मी का अब खेल न होगा नारा है

जिस धरती का खाये पापी उसी अन्न में छेद करे
ऐसा भक्त न हिंदू होगा, कृषकों का हत्यारा है।

106

यह भारत किस राह पर चल पड़ा है
माता को बेच देने पर झगड़ पड़ा है

कहता जय जय, करता पराजय की है
किस चिकनी मिट्टी का सोनघड़ा है

किस पट्टी, किस मंदिर, किस गुरुकुल
ऐसी शिक्षा किस आचार्य से पढ़ा है

फरसा उठाया भगवान परशुराम का है
अपने पैरों पर चलाने को खड़ा है

अपने ही हलधरों का नाश चाहता
देख, शर्म में हर भारतीय गड़ा है।

107

आज़ादी का अमृत-महोत्सव हलधर भी मनायें
कैसे-कैसे क्रमवार शोषण हुआ, बतायें

उर्वरक, कीटनाशक, बैंकों के ब्याज, मंडी-दलाल
एमएसपी छल संसदीय भार दुहरी कमर, क्या बचायें

कैसे धरती का विनाश हुआ, आँकड़े सुनायें
कैसे उनकी पीठ पर बोझा लदता गया, दर्शायें

जगह-जगह घूम बेबसी के ग्राफ दिखायें
पावर प्वायंट पर हलधर ह्रास-यात्रा समझायें

काले कानूनों की मिट्टी ले गाँवों की राह डाँडी तक जायें
पचहत्तर सालों की आज़ादी का अमृत महोत्सव मनायें।

108

आज एक लंबी सैर का इरादा लेकर निकला हूँ
पहले से भी ज्यादा हौसला लेकर निकला हूँ

फाँसी पर लटकना कोई बच्चों का खेल तो है नहीं
काले कानून रद्द करवाने का प्रण लेकर ही निकला हूँ

हलधर हूँ, ट्रैक्टर नहीं, कि बिना डीज़ल चल न सकूँ
सत्याग्रही हूँ कानून तोड़ू, पैदल डाँडी यात्रा पर निकला हूँ

मुल्क की हिफाजत के लिये चारों बेटे फौज को दिये
अब अपनी मिट्टी कानूनन वतन की मिट्टी में मिलाने निकला हूँ

मुँहबोली कीमत पर फसल लुटने वालों संग काग़ज़ कैसे करें
दाने-दाने तरसे भारती गिद्धों से इसे बचाने निकला हूँ।

109

ज़िंदगी मौत की दो गजी दूरियाँ
दोस्ती कोसती दो गजी दूरियाँ

हाथ घिसते गये तन सरकते गये
गले जा लगीं दो गजी दूरियाँ

स्वपाकी तो थे पृथक्वासी हुए
नज़रबंद कर गईं दो गजी दूरियाँ

काम से काम रखते ढँके नाक-मुँह
नहीं कानों पड़ीं दो गजी दूरियाँ

पाँव इतने भी कैसे भारी हुए
रहीं जसबीर से दो गजी दूरियाँ।

110

होने दो ना आँखों को दो-चार
बजने दो ना मीठी-सी झंकार

जगने दो ना जो सोया हो प्यार
कब होता है ऐसा बारम्बार?

होने दो ना थोड़ा-थोड़ा प्यार
छिनने दो ना दिल का चैन-करार

जुड़ने दो ना भावों को बेतार
हर धड़कन में बस तो जाये यार

मिलने दो ना नैनों दो-दो चार
खिलने दो ना फूल हजार हजार

भरने दो ना हरियाली का ज्वार
जीवन में आ जाये नई बहार

मुँदने दो ना पलकों में एक बार
छाने दो ना रग-रग में एक बार।

111

फिर हरा होने लगा है डूबते सूरज का घाव
फिर समंदर बह चला है दर्द का ताजा रिसाव

नोंचने से बाज आयेगा आतंकी छोकरा
आस्तीन औ' साँप में कब तक रहेगा मनमुटाव

ऐ फरिश्तों ढूँढ़ लाओ घाव की ऐसी दवा
छिलता रहे रिसता रहे पर फैलने से हो बचाव

ढह नहीं सकती इमारत कोई भी संग फेंकिए
उखड़ जाता ठोंकते लोहे पलस्तर का जुड़ाव

आग से पानी बुझाये प्यास अपनी कब तलक
जोड़ जरब जोड़ होता तोड़ देता है घटाव

पकड़ो छोड़ो भीमसेनी राग की ऊँचाईयाँ
प्यार के बोलों में घुलता सुर खुदा का वह मिलाओ

एक दिन तो अमन का पैगाम पहुँचेगा वहाँ
दिल जहाँ भाई का सोया, जागता है दुर दुराव

क्या कोई जसबीर को पट्टी उलट सिखलायेगा
ओम अल्ला वाहेगुरू में वाक का होता रचाव।

112

एक को दूसरे का सहारा है
दूसरे का तीसरे से गुजारा है

तीसरे ने चौथे पे हाथ मारा है
चौथे ने पाँचवाँ डकारा है

पाँचवा छेवें से सुर मिलाता है
छठा तो सातवें का तारा है

सातवाँ आठ-आठ रोता है
आठवाँ नौवें का दुलारा है

नौवा दसवें के साथ रहता है
दसवाँ हर किसी को प्यारा है

इस तरह दुनिया के जोड़ बनते हैं
जोड़ जुड़े लोक का पसारा है

जिस तरफ लोक साथ बढ़ जायें
उधर ही बहती शक्ति धारा है।

113

शहर नहीं शोर शराबा है
शऊर नहीं घोर अजाबा है

ऊपर दीखता पाँच सितारा
भीतर काके दा ढाबा है

जित्ते मर्जी सवाल जवाब
रब खाँटी मोनी बाबा है

जप तप हज के कागज हैं
मेहनत तेरी काबा है

यह कैसी आजादी है
अंग्रेजी का झाबा है।

1. झाबा= मलबा भरी टोकरी

114

जो जहाँ जैसा भी है मंजूर है
हुस्न तेरे नाम से मशहूर है

सो यहाँ ऐसा ही है जम्हूर है
ईश्क मेरे नाम से मजबूर है

कब न जाने पड़ी थी जालिम नज़र
दिल का शीशा बस तभी से चूर है

रास आई कब किसे दीवानगी
मजनूँ हालत देखकर मगरूर है

जसबीर जो कह दे वही कानून है
यही लोकतंत्र का शऊर है।

115

होड़-अंधा वक़्त भागा जा रहा है
आँखें मिलते दिन में भी कतरा रहा है

मैं ही था हूँ और आगे भी रहूँगा
सबसे आगे सबसे रटता जा रहा है

एक पल भी व्यर्थ न हो देखने में
धरा पर भी धरते पग घबरा रहा है

कैसे पारित हो गये कानून काले
ले शहीदी भेद खुलता जा रहा है

जगत मिथ्या काल सच्चा
मूर्ख मन मोह मद-मजमा रहा है।

116

क्या गिरा कि टूट गया
हवा के हाथ छूट गया।

मिट्टी का दुलम्भ भांडा
बुलबुले-सा फूट गया।

अपना किया ही पाया
भाग-ओ-करम रूठ गया।

नंगा दोज़ख़ चल पड़ा
जन्नत का ख्वाब लूट गया।

सच तो खैर क्या मिटता
पानी के साथ झूठ गया।

117

दिन छोटा और रात बड़ी है
वक़्त कलाई बँधी घड़ी है

छाँव तो देखो भागी जाती
धूप वहीं की वहीं खड़ी है

आँखें सूजी हैं रो-रोकर
ऐसे जुल्मी संग लड़ी है

मास्क लगायें या न लगायें
तुमको, मतलब, क्या पड़ी है

धूप के रस्ते चाय खड़ी है
सर्दी हाथ हवाई छड़ी है।

118

कोई को दुख नहीं, किसी ने इस्तीफा नहीं दिया
हलधर खेत में न सही राजधानी सीमा पर मरा

एक कहे मेरा एरिया नहीं, दूजा कहे नहीं मेरा
लाल किला फालतू में झंडों से रहा डरा

जानते बूझते मक्खी कैसे निगलें किसान
चायवाला कहता पिस्ता है जो दीखे हरा हरा

देश को नाज़ है ऐसी राष्ट्र-भक्ति पर
सड़ रही हो लाश कहें बेहोश है ज़रा ज़रा

धुर, आप अपना काम करो जसबीर जी
अभी नहीं, सुनाऊँगा मौके पर खरा-खरा।

119

हर चौराहा काला कानून वापस चाहता है
वह शहर का शहर बेचना चाहता है

हर खेत सत्याग्रही बन खड़ा है
वह गाँव का गाँव रेहन चाहता है

हलधर को सट्टा नहीं मेहनत है पसंद
वह हर मंडी स्टॉक एक्सचेंज चाहता है

दो गज दूरी जरूरी सुझाई किसानों ने ही
वह उन्हें ही मिट्टी में दफन चाहता है

थाली बजाई थी खुशहाली की खातिर
वह थाली से रोटी गबन चाहता है।

120

किसानों के समर्थन में हर चौराहे झंडे लेकर खड़े हैं
सभी कहते कृषि कानून काले वे कहें इनके फायदे बड़े हैं

फायदे बड़े हैं पर किसको यह तो विचारिए
चंद धनकुबेरों को होंगे बाकी सब घर डाके पड़े हैं

डाके पड़े हैं जो नौकरी पेशा कच्चे रोज कमाते खाते
बेरोज़गार शिक्षक तो पहले ही थे आज भूखे तड़पे हैं

भूख से तड़पे हैं ऊपर सरकारी झूठे वादों का अंत नहीं
एक चुनाव से दूसरे चुनाव टलते नियुक्ति पत्र रद्द गड़े हैं

रद्द गड़े हैं क्योंकि अदालतों में सुनवाई सरकारी पक्ष में है
विपक्ष ताबूत बंद किसान शहीद मीडिया पूँजी के स्वार्थी धड़े हैं।

121

जलियाँवाला बाग बना दो
यहीं बना दो काला पानी

सिंधु बॉडर अमर रहेगा
अमर हो गई दिल्ली रानी

पूँजी की जिद कैसी होती
लिखते अंबानी आडाणी

कुर्सी कैसे नौकर बनती
देख रहा हर हिंदुस्तानी

बूँद बूँद की कीमत देगा
हलधर जब सींचेगा पानी।

122

अपने अपने दुख हैं अपने ही सहने हैं
अपने ही अपनों के दुश्मन क्या कहने हैं

किस्मत को क्यों दोष दे रहे हलधर राजा
पूँजी के घर मेहनतकश के बल ढहने हैं

काले हों कानून तो कोई कर्म करे क्या
किरसानी का काम कमीशन के गहने हैं

मीठे-मीठे नारे देते कड़वे हैं कानून बनाते
ऊपर चोला भगवा साधु का पहने हैं

कितने दौर और, और कितने अच्छे दिन
न पहले थे न अब ही हैं न रहने है।

123

दिल्ली की सरहदों पर क़ैद हुए हैं
काले कानूनों में अवैध हुए हैं

हलधर इस रोग की दवा खुद हैं
संसदीय बीमारों के वैद हुए हैं

हल जोतने से निकली पृथ्वी-पुत्री
पिता जनक के बाल सुफैद हुए हैं

देश छुड़ाना है चंगेज़ी पंजों से
हर गाँव किसान मुस्तैद हुए हैं

रद्द होंगे तीनों कानून काले
कातिल किसानों के कैद हुए हैं।

124

कालाधन जो बाहर पड़ा है
किसानों का खूँ चूसा हुआ है

कर्जों की माफी कुबेरों ने खाई
किसानों संग तो धोखा हुआ है

पसीने को पूरी कीमत न मिलती
मालामाल दलाल हुआ है

सब्जबाग दिखाते रहे हैं
फसलों संग मुँह काला हुआ है

आज जो साँसों पे डाका पड़ा है
मरता हद जा डटा हुआ है।